सं. थ्रो.वि./एफ.डी./96 85/40302.— चंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. इलैक्ट्रो फार्मरज इण्डिया, प्लाट नं. 85, सैक्टर-24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री गोपी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौदयोगिक विवाद है;

ग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलियें, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिविनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुगे हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिविस्वना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जन, 1968, के साथ पढ़ते हुए ग्रिविस्वना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958, दारा उक्त ग्रिविस्वना की धारा 7 के ग्रिवीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उसमे समंगत या उससे मम्बिन्धित नीचे लिखा मामला न्यायितिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिश्ट करते हैं जो कि उन्नत् प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से समंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री गोपी, की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ग्री.वि/एफ.डी./96-85/40309.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. इलैक्ट्रो फार्म जै इण्डिया, प्लाट, नं. 85, सैक्टर-24, फ़रीदाबाद, के श्रमिक श्री सालिक राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिणय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, श्रीद्योगिक विवाद ग्रिश्चित्यम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 1415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए ग्रिश्चसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक करवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनण्य एवं पंचाट तीन मास में देने हेत निर्देष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री सालिक राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 10 सितम्बर, 1985

सं भ्रो.वि./एफ.डी./146-85/37125.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० थरी स्टार इलैक्ट्रीकल्स एन ग्राई.टी. फरीदाबाद, के श्रमिक श्री महेन्द्र सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य द में इसके बाद लिखित गान में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायानिर्णय हैत निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधार (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी ग्रिधिमाना सं. 5415-3-शम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिस्चना सं. 11495-जी श्रम-57/11145, दिनांक 7 फरवरी, 1958 हारा उक्त ग्रिधिस्चना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवाद स्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेन् निर्विष्ट करते हैं जो क उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित भामला है:—

क्या श्री महेन्द्र सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है? सं. ग्रो.विन/एफ.डी./185-85/37132.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० विकान्त टूल इन्जि॰ मथुरा रोड, फरीदाबाद के श्रमिक श्री ग्रोम प्रकाश तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीधोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायर्निण्य हैत निर्दिष्ट करना बांधनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना गं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं. 11495-जी श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादशस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला त्यायिनिणय एवं पंचाट तीन मास में देने हेत् निद्धिट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्कों तथा श्रिमिक के बीच या तो विवादश्रत मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है :—

क्यां श्री ग्रोम प्रकाश की सेवाग्रों का समापनं न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?